INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

<u>प्रस्तावना</u>

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams" मुख्य** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/9qwi7z

Online order करें - https://bit.ly/41wfqPD

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	राजस्थान का इतिहास	
1.	**प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख घटनाएँ** • इतिहास का अध्ययन • प्रशस्ति • राजस्थान में सिक्के • साहित्यिक स्रोत • प्राचीन सभ्यताएं	1
2.	**महत्वपूर्ण राजवंश** • गुर्जर प्रतिहार वंश • मेवाड़ का इतिहास • गुहिल वंश • चौहान वंश का इतिहास • परमार वंश • जाट वंश • मारवाड़ का इतिहास • राठौड़ वंश • कच्छवाहा राजवंश	31
3.	**मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था एवं बदलता स्वरुप** • केन्द्रीय शासन • समान्त व्यवस्था	87
4.	**राजस्थान में मराठा साम्राज्य** • पेशवा बाजीराव प्रथम और राजपूत राज्य • मराठों का राजस्थान में प्रवेश	91
5.	**19 वीं – 20 वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ** • किसान एवं जनजाति आंदोलन • राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियाँ • राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ • राजनीतिक जागरण • राजस्थान राजनीतिक संगठन व समाचार पत्र	103

6.	**राजस्थान में प्रजामण्डल आंदोलन** • प्रजामण्डल • मारवाड़ में प्रजामण्डल आंदोलन • प्रजामंडल आंदोलन के सामाजिक प्रभाव	**129**
8.	**राजस्थान का एकीकरण** • एकीकरण से पूर्व रियासतें, 1857 के विद्रोह के समय शासक तथा एकीकरण के समय शासक • एकीकरण के चरण	**142**
	कला एवं संस्कृति	
1.	**राजस्थान की धरोहर** ▪ प्रदर्शन कला एवं ललित कला तथा उनकी विशेषताएँ • शास्त्रीय संगीत • शास्त्रीय नृत्य • लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र • लोक नृत्य एवं नाट्य	**150**
2.	**राजस्थान की वास्तुशिल्प** • मंदिर • राजस्थान की मस्जिदें, दरगाह एवं मकबरें • किले एवं महल • राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ • हवेलियाँ	**182**
3.	**चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, उपशैलियाँ और हस्तशिल्प** • राजस्थानी चित्रकला का उद्भव और विकास • ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं • राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण • हस्तशिल्प	**225**
4.	**राजस्थान के प्रमुख मेले एवं त्यौहार**	**247**
5.	**प्रमुख जनजातियाँ एवं उनकी परम्पराएँ रीति – रिवाज** • विवाह से सम्बंधित रीति – रिवाज • राजस्थान में शोक से संबंधित रस्में • राजस्थान की प्रमुख प्रथाएँ	**261**

	• वेश एवं आभूषण	
6.	**राजस्थानी भाषा एवं प्रमुख साहित्यक कृतियाँ** • राजस्थानी साहित्य • राजस्थानी साहित्य की प्रमुख रचनाएँ • राजस्थान के प्रमुख कवि व रचनाकार • आधुनिक राजस्थानी साहित्य • राजस्थानी साहित्य से सम्बंधित संस्थाएँ	**273**
7	**राजस्थान के संत एवं सम्प्रदाय** • राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय	**285**
8.	**राजस्थान के लोक देवी – देवता** • लोक देवियाँ • लोक देवता	**296**
9.	**महत्वपूर्ण विभूतियाँ**	**306**

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1

प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख घटनाएँ

परिचय

सामान्यतः इतिहासकार मानव समाज, उसकी गतिविधियों, संस्थाओं, संस्कृति और परिवर्तनशीलता का कालानुक्रमिक अध्ययन ही इतिहास है ।इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय **पर्शियन युद्धों (यूनान-फारस युद्ध)** के बारे में लिखा था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका('द हिस्टरीज') थी।

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. **प्रागैतिहासिक काल** -

प्रागैतिहासिक काल वह काल है जिसके बारे में लिखित स्रोत उपलब्ध नहीं हैं तथा जिसकी जानकारी केवल पुरातात्विक साक्ष्यों — जैसे पाषाण उपकरण, जीवाश्म, गुफा-चित्र एवं आवास अवशेष — से प्राप्त होती है। यह मानव सभ्यता के प्रारम्भिक विकास का काल है, परंतु इसे मानव की उत्पत्ति का काल नहीं माना जाता; मानव की उत्पत्ति जैविक विकास की दीर्घ प्रक्रिया का परिणाम है।

2. **आद्य ऐतिहासिक काल –**

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे - सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं । इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं । सिंधु लिपि को 'भाव-चित्रात्मक' (Pictographic) भी कहा जाता है क्योंकि इसमें अक्षरों के स्थान पर चित्रों (जैसे मछली, चिड़िया आदि) का प्रयोग अधिक किया गया है। इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. **ऐतिहासिक काल**

यह मानव विकास का वह काल है जिसके लिए **लिखित विवरण** उपलब्ध हैं और उन विवरणों को आधुनिक विद्वानों द्वारा **सफलतापूर्वक पढ़ा जा चुका है**। जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

प्राचीन इतिहास के स्रोत - पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।

भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं

महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय संहिता" था।

- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1822 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है ।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा प्राकृत और ब्राह्मी लिपि थी बाद में गुप्तकाल आते आते भाषा संस्कृत हो गयी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी (जो व्यापारियों और बही-खातों में प्रचलित थी) एवं हर्ष लिपि (कुटिल लिपि का एक रूप) है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

मौर्य सम्राट अशोक के ये दो अभिलेख (भाब्रू और बैराठ) बैराठ (विराटनगर) क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं, जो वर्तमान प्रशासनिक स्वरूप में **कोटपूतली-बहरोड़** जिले के अंतर्गत आता है। भाब्रू शिलालेख की खोज **1837 में कैप्टन बर्ट** द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई थी।

- यह अभिलेख अशोक के 'बौद्ध धम्म' और 'संघ' को प्रमाणित करता है, जिससे उनके **बौद्ध अनुयायी** होने का ठोस साक्ष्य मिलता है। साथ ही, यह राजस्थान में **मौर्य साम्राज्य** के विस्तार की पुष्टि करता है।
- संरक्षण की दृष्टि से इस शिलाखंड को 1840 में **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (कोलकाता)** भेज दिया गया था, जहाँ यह आज भी सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख **अजमेर जिले** की भिनाय तहसील के **बड़ली गाँव** के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

यह अभिलेख **सिरोही** के बसंतगढ़ स्थित क्षेमकरी माता (खिमेल माता) के मंदिर से प्राप्त हुआ है। यह चावड़ा वंश के शासक **राजा वर्मलात** के समय का है।

- **शासक व वंशावली:** इसमें अर्बुदांचल (आबू) के शासक **राज्जिल** और उनके पुत्र **सत्यदेव** का विवरण मिलता है।
- **लेखक व उत्कीर्णकर्ता:** इसके लेखक **द्विजन्मा** थे और इसे **नागमुण्डी** द्वारा उत्कीर्ण किया गया था।
- यह **दधिमति माता अभिलेख** के बाद पश्चिमी राजस्थान का दूसरा सबसे प्राचीन अभिलेख माना जाता है।
- इस अभिलेख की सबसे बड़ी विशेषता इसमें **सामंत प्रथा (Feudal System)** का उल्लेख होना है।
- इसमें मेवाड़ के प्रतापी शासक **शिलादित्य** का भी वर्णन मिलता है।
- इस अभिलेख का एक विशेष महत्व यह भी है कि इसमें **'राजस्थानियादित्य'** शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसे राजस्थान नाम के प्राचीनतम प्रयोगों में से एक माना जाता है।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में **'अमृत मंथन'** का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डौर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (अंता तहसील, बारां जिला) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है ।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है ।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- ९४४ ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चाचिगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में **'बापा'** से **'महाराणा समरसिंह'** तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराड़ू का लेख :-(बाड़मेर)

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :-

- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर(पाली)में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में उस समय के विभिन्न करों व भूमि की नाप के बारे में जानकारी मिलती है।

श्रृंगी ऋषि का लेख :-

- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास श्रृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार **'कविराज वाणीविलास योगेश्वर'** थे एवं उत्कीर्णकर्ता हदा के पुत्र पन्ना थे।
- यह महाराणा मोकल के समय का है जिसमें राणा हम्मीर से मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस लेख में महाराणा मोकल द्वारा एकलिंगजी मंदिर के चारों ओर दीवार बनवाने तथा नागौर शासक फिरोज खाँ एवं गुजरात शासक अहमद खाँ को युद्ध में पराजित करने का उल्लेख है।
- इस लेख में राणा लाखा द्वारा काशी, प्रयाग व गया (त्रिस्थली) की यात्रा करने का उल्लेख भी मिलता है।

आमेर का लेख :-

- 1612 ई. में संस्कृत तथा नागरी भाषाओं में उत्कीर्ण इस लेख से कच्छवाहा शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस लेख में कच्छवाहा वंश को **'रघुवंश तिलक'** कहा गया है।
- **इसमें मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।**

बरबथ का लेख :-

- 1613-14 ई. के इस लेख में मुग़ल शासक अकबर की पत्नी मरियम-उज-ज़मानी द्वारा निर्मित बरबथ बाग एवं बयाना बावड़ी का उल्लेख मिलता है। **यह मुग़ल राजपूत वैवाहिक संबंध का बोध कराता है।**

सांभर का लेख (1634 ई.):-

- यह लेख एक सराय के दरवाजे पर हिन्दी भाषा में उत्कीर्ण है।
- इसमें अकबर द्वारा इस सराय के निर्माण करने तथा शाहजहाँ द्वारा 1634 ई. में इसका जीर्णोद्वार करने का उल्लेख है।

किणसरिया लेख (999 ई.):-

- संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण यह लेख **डीडवाना-कुचामन** के किणसरिया गाँव में अंकित है।
- इस लेख में चौहान वंश के शासक वाक् पतिराज, सिंहराज तथा दुर्लभराज की विजयों व उपलब्धियों का वर्णन है।
- दूसरे भाग में दधीचि वंश के चच्च द्वारा मंदिर बनाने का उल्लेख है।

भ्रमरमाता का लेख :-

- प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी के भ्रमर माता मंदिर से प्राप्त 490 ई. का शिलालेख 5वीं सदी की राजनीतिक स्थिति एवं प्रारंभिक कालीन सामन्त प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है।
- इस शिलालेख में गौर वंश एवं औलिकार वंश के शासकों का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख का उत्कीर्णक ब्रह्मसोम था।

पाणाहेड़ा का लेख (1059 ई.) :-

- बाँसवाड़ा के पाणाहेड़ा गाँव से प्राप्त लेख।
- इस लेख में वागड़ एवं मालवा के परमार वंश के राजाओं (मुंज, सिंधुराज एवं भोज) की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

नांदसा यूप स्तम्भ लेख (225 ई.):-

- भीलवाड़ा जिले के नांदसा गाँव से प्राप्त स्तम्भ लेख।
- यह स्तम्भ लेख 'सोम' द्वारा स्थापित है।
- इस स्तम्भ लेख से उत्तरी भारत में प्रचलित वैदिक श्रौत यज्ञों के बारे में जानकारी मिलती है।

बर्नाला यूप स्तम्भ लेख (227 ई.):-

- यह स्तम्भ लेख जयपुर रियासत के बरनाला ग्राम में स्थित था।
- बर्नाला (जयपुर) से प्राप्त।
- वर्तमान में आमेर संग्रहालय में सुरक्षित।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं –

2. कालीबंगा की सभ्यता –

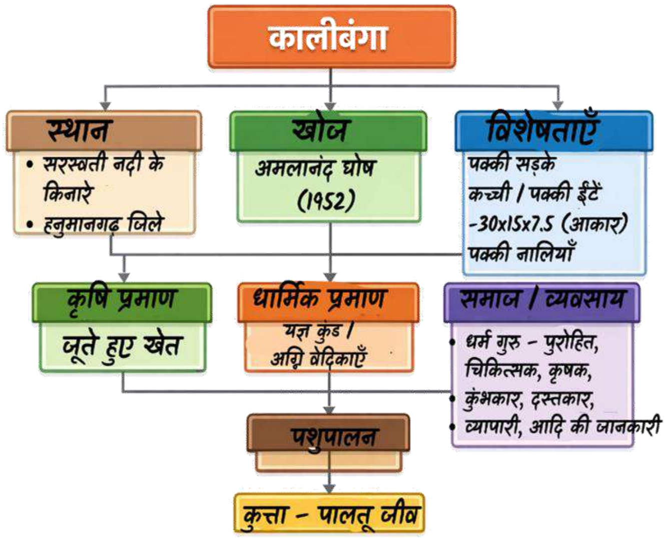

- कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी**। इसे **दृषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।

  यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं, विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज –

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।

  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली हैं वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- *यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था ।*
- *अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे ।*
- *अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।*
- *एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना।*
- ***स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।*
- *कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।*
- *यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।*
- *यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।*
- *कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।*
- *कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।*
- *इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।*
- *इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।*

<u>कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन</u>

- *उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।*
- *कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौं, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।*

<u>मृतक संस्कार</u> :

*कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं ।*

- *शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।*
- *दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।*
- *तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।*
- *उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मद्भाण्ड आदि रखे जाते थे।*
- *यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली हैं, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।*

<u>आर्थिक जीवन</u> :

- *कालीबंगा के भग्नावशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों का जीवन सामान्य रूप से समृद्ध था। सुख एवं समृद्धि के लिए लोगों ने विभिन्न साधनों का उपयोग किया था।*
- *कालीबंगा के निवासी कौन-कौन से पशु पालते थे, इसका ज्ञान हमें पशुओं के अस्थि अवशेषों, मृद पात्रों पर किये गये चित्रांकनों, मुद्रांकनों तथा खिलौनों से होता है। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था ।*
- ***सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौं और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।*
- *हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।*
- *कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।*
- *ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था।*
- *स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृद्भाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।*
- *वह विभिन्न प्रकार के मृद्भाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृद्भाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवतः अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।*
- *इन मृद्भाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ*

5. कुम्भलगढ़ शिलालेख	1460 ईस्वी.	• संस्कृत भाषा में • कुंभा की विजयों की जानकारी
6. राज प्रशस्ति	1676 ईस्वी.	• राजसमंद झील के किनारे, नौ चौकी स्थान पर • संस्कृत भाषा में • विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति • रचियता – रणछोड़ तैलंग

☞ **चौहान वंश का इतिहास**

➢ **अजमेर के चौहान**

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया।**
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया।**
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडाऽ बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के**

युद्ध/तुमुल का युद्ध' (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मौहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मौहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मौहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था।

☞ **रणथम्भौर के चौहान**

➢ **रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत**

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी –

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में

प्रशासविक व्यवस्था

मुख्य लागे

(1) नियमित लाग
(2) अनियमित लाग
(3) नल बट एवं नहर वास
(4) जाजम लाना
(5) मलबा व चौधर बाब
(6) धुँआ भाद्
(7) जकात कर
(8) लाकड़ कर
(9) अन्य – दस्तूर, नजराना, बकरा लाग, खिचड़ी अंत लाग

राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार

- बाजीराव प्रथम
- सवाई जयसिंह की मराठा नीति
- सरदेशमुखी कर
- मराठो का राजस्थान में प्रवेश
- हुरड़ा सम्मेलन
- पेशवा का राजस्थान आगमन
- धौलपुर समझौता
- जयपुर का उत्तराधिकार संघर्ष
- जोधपुर का उतराधिकार संघर्ष
- मेवाड़ का उतराधिकार संघर्ष

अध्याय – 5

19 वीं – 20 वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ

किसान एवं जनजाति आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

➢ **राजस्थान में किसान आन्दालनों के प्रमुख कारण :-**

राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक संरचना सामंती रही है यह संरचना त्रिस्तरीय थी जिसमें क्रमशः शासक, जागीरदार व कृषक वर्ग सम्मिलित थे इन सभी के पारस्परिक अंतर्संबंधो पर यह व्यवस्था टिकी थी। 19वीं शताब्दी के अंत तक ये संबंध सौहार्द पूर्ण बने रहे, मगर इसके बाद राजस्थान का परिदृश्य बदलना आरंभ हो गया इसका परिणाम यह हुआ कि राजस्थान के विभिन्न भागों को अनेक किसान आंदोलनों का सामना करना पड़ा । इन किसान आंदोलनों के प्रमुख कारण :-

- अंग्रेजों के प्रभाव में आकर शासकों ने अपनी प्रजा की ओर पर्याप्त ध्यान देना छोड़ दिया। शासकों व जागीरदारों ने स्वयं का अस्तित्व ही ब्रिटिश सत्ता पर आधारित समझ लिया था इसलिए शासकों की निर्भरता जागीरदारों पर व जागीरदारों की निर्भरता कृषकों पर समाप्त होती चली गई।
- राजस्व अधिक वसूलने के साथ-साथ कृषकों से ली जाने जाने वाली बेगारों व लाग-बागों में भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई।
- इस काल में अन्य व्यवसायों से विस्थापित लोगों के कृषि पर निर्भर हो जाने के कारण कृषक मजदूरों की संख्या में वृद्धि हुई। कृषक मजदूरों की संख्या में वृद्धि होने के कारण जागीरदारों के रुख में अधिक कठोरता आ गई।
- कृषि उत्पादित मूल्यों में गिरावट व इजाफा दोनों स्थितियाँ कृषकों के लिए लाभकारी नहीं थे। जहाँ एक ओर कीमत में गिरावट के कारण कृषकों की बचत का मूल्य कम हो जाता था, वहीं कीमतें बढ़ने के कारण भी उसे लाभ का भाग नही मिल पाता था, क्योंकि जागीरदार लगान के रूप में लेता था।
- अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्थाओं को अपनाने के फलस्वरूप सामंतो का कृषकों के प्रति उदार व पैतृक नज़रिया बदल गया ।

- **बिजौलिया किसान आंदोलन**

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब 44 साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 44 वर्षो तक)-

जिला भीलवाड़ा

बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली था ।

संस्थापक अशोक परमार

बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।

कारण

1. लगान की दरें अधिक थी।

2. लाग-बाग कई तरह के थे।

3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।

बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।

बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व - साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाधाय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रुपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया । बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे ।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।
- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।
- **तृतीय चरण (1923 से 1941)**
- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया ।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है ।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था ।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था ।

बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन

- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरु किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खाँ हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

बूँदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा। 'साद' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन लिया जाने लगा । इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई। किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई। ये लागें दो प्रकार की थी।

1. स्थाई लाग

2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए।

- बिजौलिया, बेंगू और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूँदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूँदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा 1 रुपये पर 1 आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था । किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।
- मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आंदोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई । अप्रैल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूँदी राज्य के 'बराड़' क्षेत्र के पीड़ित किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को बरड़ किसान आंदोलन भी कहते हैं । किसानों को राजस्थान सेवा संघ का मार्गदर्शन प्राप्त था।
- किसानों ने राज्य की सरकार को अनियमित लाग, बेगार व भेंट आदि देना बंद कर दिया। आंदोलन का नेतृत्व 'राजस्थान सेवा संघ' के कर्मठ कार्यकर्ता 'नयनू राम शर्मा कर रहे थे। इनके नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया।
- राज्य की ओर से बातचीत द्वारा किसानों की समस्याओं एवं शिकायतों को दूर करने के लिए कई प्रयास हुए, किन्तु वे विफल हो गए। तब राज्य की सरकार ने दमनात्मक नीति अपनाना शुरू किया और निहत्थे किसानों पर निर्ममतापूर्वक लाठियां व गोलियां बरसाई गई ।
- सत्याग्रह करने वाली स्त्रियों पर घुड़सवारों द्वारा घोड़े दौड़ाकर एवं भाले चलाकर अमानवीय अत्याचार किया गया। पुलिस द्वारा किसानों पर की गई। गोलीबारी में झण्डा गीत गाते हुए 'नानकजी भील' शहीद हो गए ।
- आंदोलनकारियों के नेता नयनू राम शर्मा, नारायण लाल, भंवरलाल आदि एवं राजस्थान सेवा संघ के अनेक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर मुकदमे चलाए गए। नयनू राम शर्मा को राजद्रोह के अपराध में 4 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी ।
- यद्यपि यह आंदोलन असफल रहा किन्तु इस आंदोलन से यहाँ के किसानों को कुछ रियायतें अवश्य प्राप्त हुई और भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया तथा राज्य के प्रशासन में सुधारों का सूत्रपात हुआ।
- बूँदी का किसान आंदोलन राज्य प्रशासन के विरुद्ध था, जबकि मेवाड़ राज्य के बिजौलिया के आंदोलन में किसानों ने अधिकांशतः जागीर व्यवस्था का विरोध किया था । बूँदी के किसान आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

नीमूचाणा किसान आंदोलन 1923-24

- **नीमूचाणा किसान आंदोलन** – कोटपूतली-बहरोड़ किसान आंदोलन 14 मई 1925 को गठित नीमूचाणा हत्याकाण्ड के लिए प्रसिद्ध है ।
- 31 मई 1925 को नीमूचाणा हत्याकाण्ड तरुण राजस्थान समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ ।
- नीमूचाणा हत्याकाण्ड को महात्मा गांधी ने दोहरी डायरशाही और जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से भी अधिक बुरा बताया था ।
- अलवर में 80 प्रतिशत भूमि खालसा के अंतर्गत थी जबकि केवल 20 प्रतिशत भूमि जागीरदारों के नियंत्रण में थी ।
- अलवर में अधिकांश किसानों को खालसा क्षेत्रों में स्थायी भू-राजस्व के अधिकार प्राप्त थे, जिन्हें 'बिश्वेदारों' के नाम से जाना जाता था । अलवर में भू-राजस्व की सबसे गलत पद्धति इजारा पद्धति लागू थी, जिसके तहत् ऊँची बोली बोलने वाले को निश्चित भूमि निश्चित अवधि के लिए दे दी जाती थी ।
- 1876 ई. में ब्रिटिश पद्धति पर अलवर में पहला भूमि बंदोबस्त किया गया ।
- नीमूचाणा किसान आंदोलन अलवर में हुआ नीमूचाणा गांव वर्तमान में कोटपूतली-बहरोड़ जिले की बानसूर तहसील में हैं ।
- 1923 ई. में अलवर के शासक जयसिंह के द्वारा किसानों पर लाग/कर लगाए जाने के कारण इस आंदोलन की शुरुआत हुई ।
- इजारा पद्धति - ऊंची बोली बोलने वाले को निश्चित भूमि निश्चित अवधि के लिए दिया जाना इजारा पद्धति कहलाती हैं ।
- नीमूचाणा गाँव के किसान रघुनाथ की पुत्री सीतादेवी 14 मई, 1925 ई. को नीमूचाणा गाँव में महिलाओं का नेतृत्व करते हुए किसानों को ललकार रही थी कि - " हम किसी भी हालत में ठिकाने को अधिक लगान नहीं देंगे । '
- 1924 ई में नीमूचाणा आंदोलन की समस्या को माधवसिंह व गोविंदसिंह ने पुकार नामक पुस्तक के माध्यम से उठाया।

अध्याय – 6

राजस्थान में प्रजामण्डल आंदोलन

➢ **प्रजामण्डल**

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरम्भ हुआ।
- कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी।
- 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया।
- 1938 ई. में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा चलाये जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन दिया ।
- कांग्रेस के इस प्रस्ताव से देशी रियासतों में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन मिला । इन राज्यों में चल रहे आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ गये और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। प्रजामण्डल की स्थापना हुई, जिसने देशी शासकों के अधीन उत्तरदायी प्रशासन की मांग की।

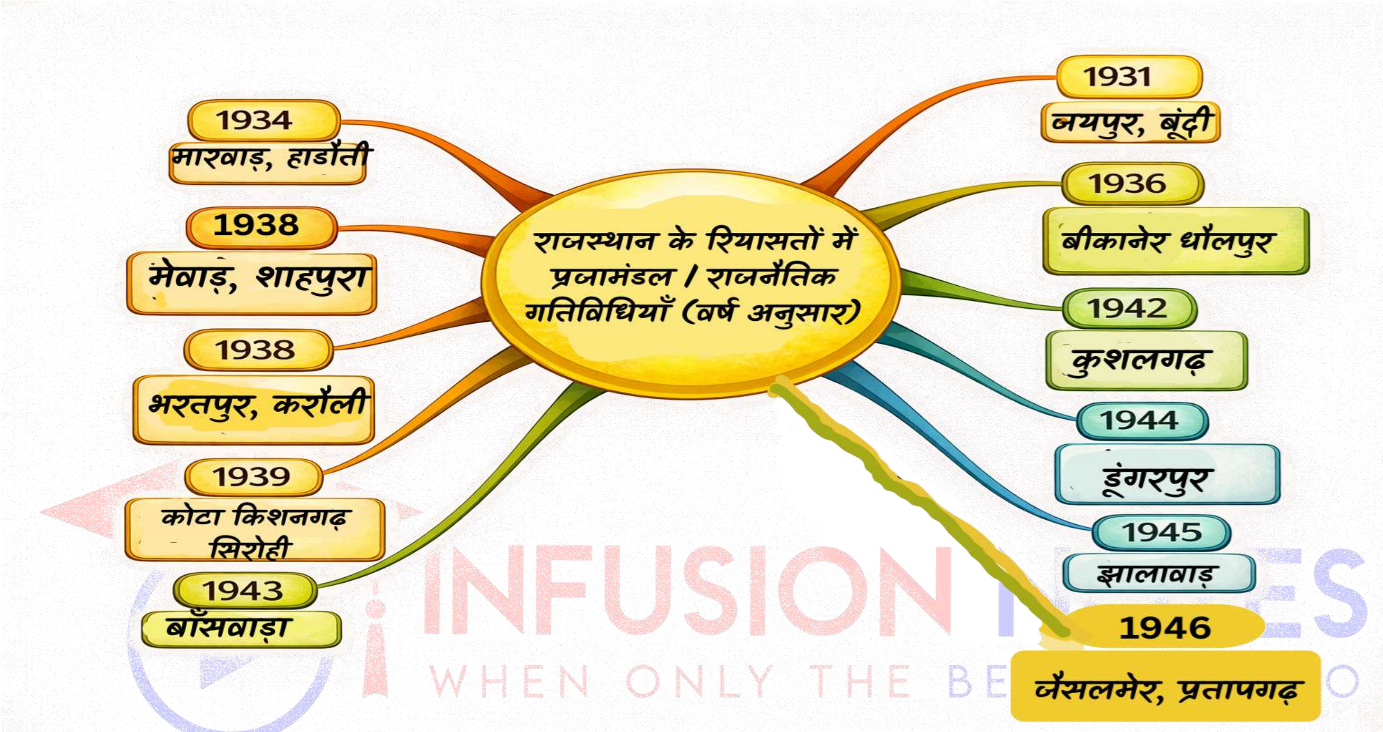

बीकानेर में प्रजामण्डल

- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह प्रतिक्रियावादी व निरंकुश शासक थे।
- गंगासिंह (1880-1943) प्रथम भरतपुर के बाद शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि व 1921 में स्थापित नरेन्द्र मण्डल के संस्थापकों में से एक थे।
- बीकानेर क्षेत्र के प्रारंभिक नेता कन्हैयालाल ढूँढ व स्वामी गोपालदास थे, इन्होंने 1907 में चूरू में सर्वहितकारिणी सभा स्थापित की।
- सर्वहितकारिणी सभा ने चूरू में लड़कियों की शिक्षा हेतु 'पुत्री पाठशाला' व अनुसूचित जातियों की शिक्षा के लिए कबीर पाठशाला स्थापित की गई। महाराजा इस रचनात्मक कार्य के प्रति भी आशंकित हो उठे और षड्यंत्र बताकर उन्हें प्रतिबंधित कर दिया।
- 26 जनवरी 1930 को स्वामी गोपालदास व चन्दनमल ब्राह्मण ने सहयोगियों के साथ चूरू के सर्वोच्च शिखर धर्मस्तूप पर तिरंगा फहराया।
- अप्रैल, 1932 ई. में जब लंदन में महाराजा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गये तो बीकानेर में एक दिग्दर्शन' नामक पेम्पलेट बांटे गये। जिसमें बीकानेर की वास्तविक दमनकारी नीतियों का खुलासा किया गया। लौटकर महाराजा ने सार्वजनिक सुरक्षा कानून लागू किया।
- स्वामी गोपालदास, चंदनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ, खूबचन्द सर्राफ आदि को बीकानेर षड़यंत्र केस के नाम पर गिरफ्तार कर लिया गया।
- अक्टूबर, 1936 में मघाराम वैध ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की।
- 4 अक्टूबर, 1936 ई. को प्रमुख नेता शीघ्र ही निर्वासित कर दिये गये, जिनमें वकील मुक्ताप्रसाद, मघाराम वैध व लक्ष्मीदास शामिल थे । रघुवरदयाल ने 22 जुलाई, 1942 ई. को बीकानेर प्रजा ने परिषद् की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महाराजा के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।
- 1943 में गंगासिंह जी की मृत्यु के बाद शार्दुल सिंह गद्दी पर बैठे। वे भी दमन में विश्वास रखते थे।
- द्वारका प्रसाद नामक छठी कक्षा के बालक को संस्था से निकाला गया क्योंकि उसने उपस्थिति गणना के समय जयहिन्द बोल दिया था।

- 26 अक्टूबर, 1944 ई. को बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया जो राज्य में प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन था। इसी बीच भारत में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई और महाराजा ने उत्तरदायी शासन की घोषणा की।
- 30 जून, 1946 ई. में रायसिंह नगर में हो रहे प्रजा परिषद् के सम्मेलन में पुलिस ने गोलीबारी की। बदली हुई परिस्थितियों को देखते हुए सत्ता हस्तान्तरण के लक्षण जब दिखने लगे तो प्रजा परिषद् का कार्यालय पुनः स्थापित किया गया।
- 1946 ई. में ही दो समितियों, संवैधानिक समिति व मताधिकार समिति की स्थापना की गई। रिपोर्ट को लागू करने का आश्वासन तो दिया गया पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो पाई व उत्तरदायी शासन की मांग अधूरी ही रही।
- 16 मार्च, 1948 ई. में जसवंत सिंह दाउदसर के नेतृत्व में मंत्रिमण्डल बना जिसे प्रजा परिषद ने अस्वीकृत कर दिया और उसके मंत्रियों ने इस्तीफा दिया।
- 30 मार्च, 1949 ई. को वृहत्तर राज्य के निर्माण के साथ रघुवर दयाल, हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमण्डल में सम्मिलित हुए।

जैसलमेर में प्रजामण्डल

- यह क्षेत्र राजस्थान का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र था, जो विस्तारित रेगिस्तान, यातायात संचार के सीमित साधनों व राजनीतिक पृथकता के कारण शेष राजस्थान से कटा ही रहा।
- यहाँ के महारावल का दमन अत्यन्त तीव्र था। जिसके कारण 1915 ई. में सर्व हितकारी वाचनालय मीठालाल व्यास के आशीर्वाद से सागरमल गोपा व उसके साथियों द्वारा स्थापित किया गया।

मेवाड़ में प्रजामण्डल

- उदयपुर में प्रजामण्डल आंदोलन की स्थापना का श्रेय श्री माणिक्यलाल वर्मा को जाता है। 24 अप्रैल, 1938 को श्री बलवन्तसिंह मेहता की अध्यक्षता में मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना की।
- प्रजामण्डल की स्थापना के समाचारों से मेवाड़ की जनता में अभूतपूर्व उत्साह का संचार हुआ, परन्तु जैसे ही मेवाड़ सरकार को इसकी सूचना मिली, सरकार ने श्री वर्माजी को मेवाड़ से निष्कासित कर दिया तथा बिना सरकार से आज्ञा लिए सभा, समारोह करने संस्थाएँ बनाने एवं जुलूस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- उदयपुर सरकार द्वारा मेवाड़ प्रजामण्डल को 24 सितम्बर, 1938 को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, परन्तु उसी दिन नाथद्वारा में निषेधाज्ञा के बावजूद कार्यकर्ताओं द्वारा विशाल जुलूस निकाला गया।
- प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सरकार को अल्टीमेटम दिया कि 4 अक्टूबर, 1938 तक प्रजामण्डल से प्रतिबन्ध नहीं हटाया गया तो सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाएगा।
- मेवाड़ सरकार ने प्रजामण्डल नेताओं व कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया । श्री भूरेलाल बया को सराड़ा किले (मेवाड़ का काला पानी) में नजरबंद कर दिया गया।
- विजयादशमी के दिन प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया । क्रांतिकारी रमेशचन्द्र व्यास को पहला सत्याग्रही बनकर गिरफ्तार होने का श्रेय प्राप्त हुआ। सत्याग्रहियों पर पुलिस दमन चक्र प्रारम्भ हो गया।
- इसकी परवाह न करते हुए सत्याग्रहियों ने जगह-जगह जुलूस निकालें, आमसभाएँ की एवं सरकार की आलोचना की।
- श्री माणिक्यलाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तिका छपवाकर वितरित करवाई जिसमें मेवाड़ में व्याप्त अव्यवस्था एवं तानाशाही की आलोचना की गई।
- 24 जनवरी, 1939 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की पत्नी नारायणी देवी वर्मा एवं पुत्री को प्रजामण्डल आंदोलन में भाग लेने के कारण राज्य से निष्कासित कर दिया गया।
- मेवाड़ में भयंकर अकाल पड़ने के कारण प्रजामण्डल ने गाँधीजी के आदेश पर 3 मार्च, 1939 को सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। श्री वर्माजी का स्वास्थ्य खराब होने की खबर मिलने पर श्री जवाहर लाल नेहरू ने मेवाड़ सरकार को पत्र लिखा, तब 8 जनवरी, 1940 को उन्हें जेल से रिहा किया गया।
- इसके बाद प्रजामण्डल ने बेगार एवं बलेठ प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया फलस्वरूप मेवाड़ सरकार को इन दोनों, प्रथाओं पर रोक लगानी पड़ी। यह मेवाड़ प्रजामण्डल की पहली नैतिक विजय थी।
- 22 फरवरी, 1941 को मेवाड़ प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध हटने के बाद प्रजामण्डल ने सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया एवं 25-26 नवम्बर, 1941 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में पहला अधिवेशन आयोजित किया, जिसका उद्घाटन आचार्य 'जे. बी. कृपलानी' ने किया।
- अधिवेशन में अपार भीड़ के समक्ष राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना, सरकार द्वारा प्रस्तावित धारा सभा में संशोधन एवं नागरिक अधिकारों की बहाली आदि प्रस्ताव पारित किए गए। इसके बाद मेवाड़ के प्रत्येक जिले एवं परगने में प्रजामण्डल की शाखाएँ खोली गईं।
- मेवाड़ प्रजामण्डल ने कांग्रेस द्वारा 9 अगस्त, 1942 को शुरू किये गये 'भारत छोड़ों आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ किया।
- 20 अगस्त, 1942 को प्रजामण्डल की कार्यसमिति ने मेवाड़ महाराणा को पत्र द्वारा चेतावनी दी कि यदि 24 घंटे के भीतर महाराजा ब्रिटिश सरकार से संबंध विच्छेद नहीं करते हैं तो जन आंदोलन प्रारम्भ किया जाएगा।
- सरकार द्वारा प्रजामण्डल कार्यकारिणी के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 23 अगस्त से जुलूस आदि पर प्रतिबंध लगा दिए गये। सरकारी दमन चक्र प्रारम्भ हो गया कार्यकर्ताओं ने सर्वत्र 'अंग्रेजों भारत छोड़ों' के नारे

एकीकरण के चरण

(i) प्रथम चरण –

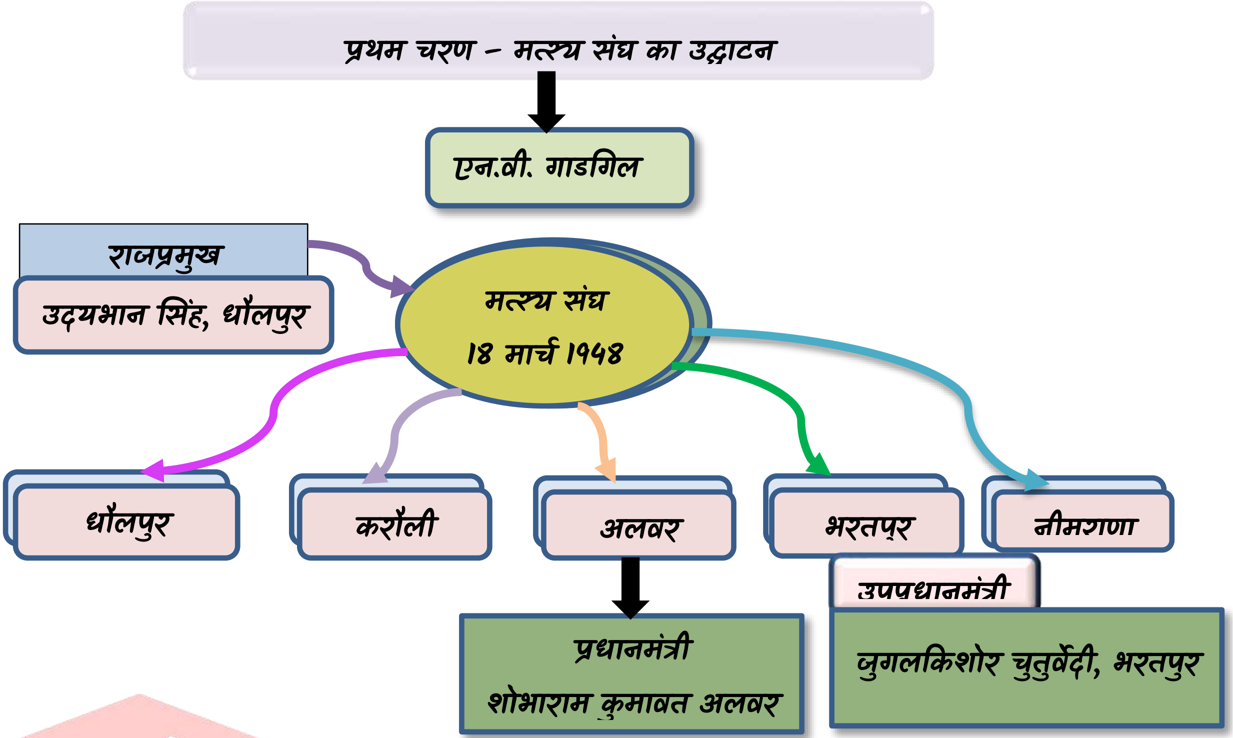

(ii) द्वितीय चरण –

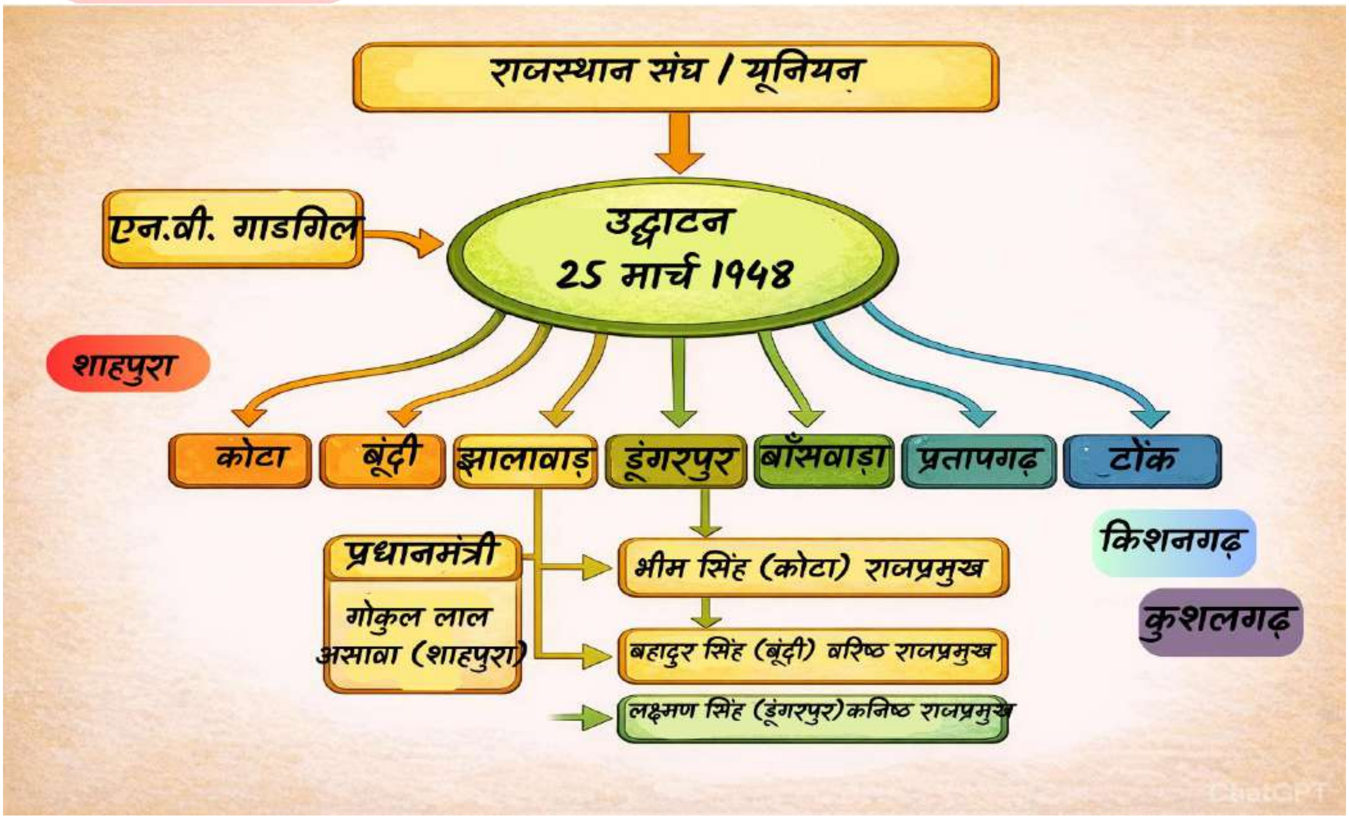

❖ **राग-रत्नाकर**
- जयपुर के उणीयारा ठिकाने के राव भीमसिंह के दरबार में रहकर राधा कृष्ण ने इस ग्रंथ की रचना की थी ।

❖ **राग कल्पद्रुम**
❖ इस ग्रंथ की रचना मेंवाड़ निवासी श्री कृष्णानन्द व्यास ने की थी।
❖ यह ग्रंथ संगीत के साथ-साथ हिंदी साहित्य के इतिहास के निर्माण के लिये भी उपयोगी माना जाता है।

राजस्थान के प्रमुख संगीतकार

❖ **सवाई प्रताप सिंह**
- जयपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह संगीत एवं चित्रकला के प्रकांड विद्वान और आश्रयदाता थे।
- इन्होंने संगीत का विशाल सम्मेलन करवाकर संगीत के प्रसिद्ध ग्रंथ राधा गोविंद संगीत सार की रचना करवाई।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- इनके दरबार में 22 प्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं विद्वानों की मंडली को'गंधर्व बाईसी' कहा जाता था।

❖ **पंडित उदय शंकर**
- उदयपुर में जन्मे श्री उदय शंकर प्रख्यात कथकली नर्तक थे।

❖ **पंडित रविशंकर**
- रविशंकर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिखा उस्ताद अल्लाऊद्दीन खाँ से प्राप्त की।
- अपने भाई उदय शंकर के नृत्य दल के साथ भारत और भारत से बाहर समय गुजारने वाले रविशंकर ने 1938 से 1944 तक सितार का अध्ययन किया और फिर स्वतंत्र तौर से काम करने लगे।
- उन्होंने भारतीय संगीत को विदेशों तक लोकप्रिय बनाया है इन्हें अमेरिका का प्रसिद्ध संगीत पुरस्कार ग्रैमी पुरस्कार मिल चुका है।
- पं. रविशंकर विश्व प्रसिद्ध सितार वादक

❖ **पं.विश्वमोहन भट्ट**
➢ इनका जन्म 12 जुलाई, 1950 ई. जयपुर में हुआ था।
➢ इनके गुरु पं. रविशंकर थे।
➢ विश्वमोहन ने गिटार, सरोद, बीणा का समन्वय कर' मोहन वीणा' नामक नये वाद्य यंत्र का आविष्कार किया तथा' गौरीम्मा' नामक नई राग का सृजन किया।
➢ पं. विश्वमोहन भट्ट को में इनके म्यूजिकल एलबम' एमिटिंग बाई द रिवर' के लिए 1993 में ग्रेमी पुरस्कार, वर्ष 1998 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार व वर्ष 2002 में पद्मश्री सम्मान वर्ष 2017 में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया।
➢ इनके बड़े भ्राता पंडित शशि मोहन भट्ट भी प्रसिद्ध सितार वादक थे जिनका वर्ष 2001 में जयपुर में निधन हो गया।

❖ **गवरी देवी**
- यह बीकानेर की थी।
- यह जोधपुर राजघराने में एक मांड गायिका थी ।
- महाराजा उम्मेद सिंह के समय गवरी देवी को सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली ।
- इन्हें राजस्थान की कोकिला कहते हैं।
- इन्हें' मांड मल्लिका' भी कहते है।

> ☞ **NOTE :-** पाली की गवरी देवी भी प्रसिद्ध मांड गायकी है, जो भैरवी युक्त मांड गायन में प्रसिद्ध है ।

❖ **बनो बेगम**
- बन्नो बेगम शास्त्रीय गायन, माण्ड गायन, ठुमरी, गीत व गजल में निपुण थी ।
- बन्नो बेगम की माता जौहरबाई भी जयपुर दरबार में गायिका थीं ।
- बन्नो बेगम जयपुर गुणीजन खाना में शामिल थीं इनके गुरु नजीन खां थे।

❖ **मांगीबाई**
- उनका जन्म प्रतापगढ़ में हुआ।
- मांगीबाई मांड व शास्त्रीय गायन में निपुण थी।

❖ **अल्लाह जिल्लाई बाई**
- इनका जन्म 1902 ई. बीकानेर में हुआ था ।
- महाराजा गंगासिंह ने इन्हें बचपन में ही गुणीजन खाना में प्रवेश करवा दिया।
- 2003 में अल्लाह जिल्लाई बाई पर 5 रुपये की डाक टिकट जारी हुई ।
- यह बीकानेर राजघराने में मांड गायिका थी ।
- अल्लाह जिल्लाई बाई को मरु कोकिला कहते हैं।
- संगीत की शिक्षा उस्ताद हुसैन बक्स ने दी थी ।
- 1982 में उन्हें पद्म श्री का अवार्ड मिला ।
- केसरिया बालम, बाई सारा वीरा इनके प्रमुख गीत हैं।
- 3 नवम्बर, 1992 में बीकानेर में अल्लाह जिल्लाई बाई का निधन हुआ ।

❖ **अल्लादिया खां**
- इनका जन्म 1855 ई. में उणियारा (टोंक) (तब जयपुर राज्य के अधीन) में हुआ था।
- अल्लादिया खाँ जयपुर संगीत घराने के प्रमुख संगीतकार थे।
- एम. आर. जयकर ने अल्लादिया खाँ को माऊण्ट एवरेस्ट ऑफ म्यूजिक तथा संगीत सम्राट की उपाधि दी ।

❖ **जहीरुद्दीन फैयाज उद्दीन डागर**
- प्रसिद्ध ध्रुपद गायक जिन्होंने द्रुपद में जुगलबंदी की परंपरा स्थापित की और द्रुपद को नया रूप दिया।
- डागर घराना (Dagar Gharana) के प्रतिनिधि
- "डागर ब्रदर्स" के नाम से प्रसिद्ध

☞ प्रमुख महल

❖ अबलामीणी का महल

- कोटा के रावमुकुन्द सिंह द्वारा मुकन्दरा की पहाड़ियों के शिखर पर इस महल का निर्माण करवाया गया।
- दर्रा वन्य जीव अभयारण्य में यह महल स्थित है।
- इसे राजस्थान का दूसरा, हाड़ौती या छोटा ताजमहल भी कहा जाता है।
- इस नाम से इसे उपमित करने वाले विदेशी इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड थे।

❖ डीग के महल –डीग

- डीग महल का निर्माण महाराजा सूरजमल ने करवाया था।
- डीग महल बलुआ पत्थरों से निर्मित है।

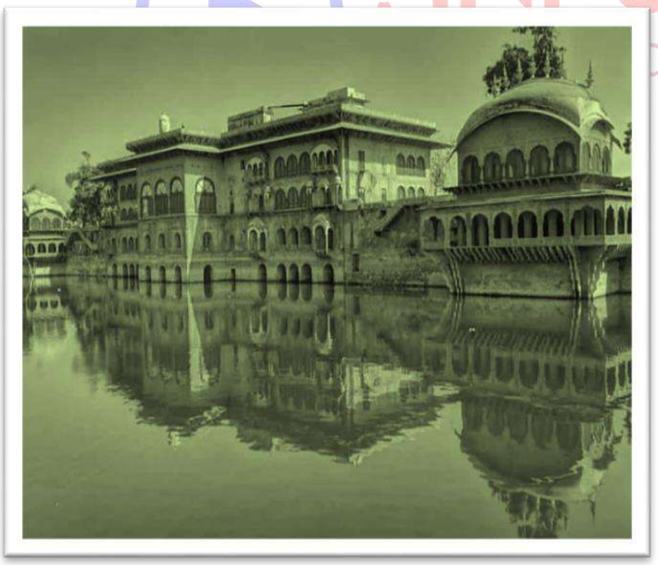

- डीग का पुराना नाम' दीर्घपुर' था।
- डीग जलमहलों की नगरी के रूप में तथा फव्वारों के लिए भी प्रसिद्ध है।
- डीग भरतपुर रियासती शासकों की प्राचीन राजधानी रहा है।
- यह महल चतुष्कोणीय आकृति का निर्माण करते है।
- डीग महल में गोपाल भवन सबसे बड़ा है। उसके दोनों तरफ सावन व भादों भवन बने हुये है।

❖ हवामहल – जयपुर

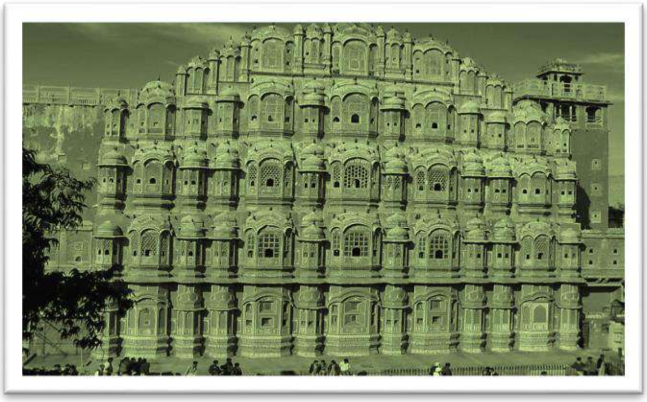

- हवामहल का निर्माण सवाई प्रताप सिंह द्वारा 1799 ई. में करवाया गया।
- प्रताप सिंह भगवान श्री कृष्ण के भक्त थे इसीलिए इसका निर्माण मुकुट के आकार में करवाया।
- हवामहल को उस्ताद लाल चंद कारीगर के द्वारा बनाया गया।
- हवामहल एक पाँच मंजिल की ईमारत है। हवामहल की पहली मंजिल' शरद मंदिर', दूसरी मंजिल' रत्न मंदिर', तीसरी मंजिल' विचित्र मंदिर', चौथी मंजिल',' प्रकाश मंदिर' तथा पाँचवीं मंजिल' हवा मंदिर' के नाम से जानी जाती है।
- इसमें 365 खिड़कियाँ व 953 झरोखें है।
- यह लगभग 88 फीट ऊँचा है।
- हवामहल का निर्माण बलुवा पत्थर तथा चूने से किया गया।

❖ राजमहल-उदयपुर

- इस महल का निर्माण महाराणा उदयसिंह ने करवाया।
- राजमहल पिछोला झील के तट पर स्थित है।
- इस महल को प्रसिद्ध इतिहासकार फर्ग्यूसन ने **राजस्थान के विण्डसर महल की** संज्ञा दी है।
- राजमहल के अन्दर ही महाराणा प्रताप का वह ऐतिहासिक भाला रखा गया जिससे हल्दी घाटी के युद्ध में आमेर के मानसिंह पर प्रताप ने वार किया था।

❖ एक जैसे नौ महल- जयपुर

- नाहरगढ़ दुर्ग में स्थित इन महलों का निर्माण महाराजा माधोसिंह द्वितीय ने अपने नौ पासवानों के नाम पर करवाया।
- माधोसिंह के नौ रत्न - सूरजप्रकाश, खुश प्रकाश, जवाहर प्रकाश, ललित प्रकाश, लक्ष्मी प्रकाश, आनन्द प्रकाश, चन्द्रप्रकाश, रत्न प्रकाश, वसन्त प्रकाश

❖ खेतड़ी महल-झुंझुनूं

- खेतड़ी महल को' राजस्थान का दूसरा हवामहल' कहा जाता है।
- खेतड़ी महल का निर्माण राजा भोपालसिंह ने सन् 1760 में ग्रीष्म ऋतु में विश्राम के लिए किया था।
- खेतड़ी महल सात मंजिली कटोरेनुमा बुर्ज है ।
- खेतड़ी महल को शेखावटी का हवामहल कहा जाता है।

❖ **उम्मेद भवन पैलेस- जोधपुर**

- इसका शिलान्यास 1929-1942 को महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा किया गया।
- उम्मेद भवन पैलेस एशिया के भव्य प्रसादों में से एक है।
- उम्मेद भवन का निर्माण अकाल राहत कार्यों के तहत सम्पन्न हुआ।
- उम्मेद भवन को छीतर पत्थर से बनने के कारण छीतर पैलेस भी कहा जाता है।
- उम्मेद भवन यूनानी / इटेलिक व गौथिक शैली में बना हुआ है।
- उम्मेद भवन के वास्तुकार हेनरी वॉल लंचेस्टर थे।

❖ **एक थम्बा महल- (मण्डोर) जोधपुर**

- जोधपुर में मण्डोर के निकट इसका निर्माण महाराजा अजीतसिंह ने करवाया था ।
- अष्ट पहलू के एक थम्ब पर बना यह पत्थरों के मेल का अद्भुत नमूना है।
- एक थम्बा महल को' प्रहरी मीनार' के नाम से जाना जाता है।
- यह तीन मंजिला भवन है।

❖ **एक थाम्बिया महल- डूंगरपुर**

- डूंगरपुर में गेपसागर के पास स्थित उदयविलास राजप्रासाद में स्थित इस महल का निर्माण महारावल शिवसिंह ने राजमाता ज्ञान कुंवर की स्मृति में करवाया था ।

❖ **रूठी रानी का महल - अजमेर**

- रूठी रानी का महल अजमेर में आनासागर झील के तट पर स्थित है।

❖ **सुनहरी कोठी- टोंक**

- सुनहरी कोठी का निर्माण नवाब वजीउद्दौला खाँ ने 1824 में करवाया ।
- सुनहरी कोठी शीशमहल के नाम से प्रसिद्ध है।

- सुनहरी कोठी की पहली मंजिल का निर्माण वजीउद्दौला खाँ ने करवाया ।
- इस कोठी की दूसरी मंजिल नवाब मोहम्मद इब्राहीम अली ने 1870 ई. में बनवाई।
- सुनहरी कोठी में बैठकर नवाब धार्मिक व राजनैतिक मामलों की चर्चा किया करते थे।

❖ **मुबारक महल - टोंक**

- यहाँ पर बकरा ईद के अवसर पर ऊँट की कुर्बानी दी जाती थी।
- यह महल ऊँट की कुर्बानी के लिए प्रसिद्ध है।
- इस महल में टोंक रियासत के पहले नवाब अमीरुद्दौला ने 1817 ई. में ऊँट की कुर्बानी शुरू की थी। (वर्तमान में यह बंद है)

❖ **मुबारक महल- जयपुर**

➢ जयपुर के मध्य जय निवास के पास मुबारक महल का निर्माण माधोसिंह द्वितीय के द्वारा 1900 ई. में करवाया गया।
➢ अतिथि सेवा के लिए इसका निर्माण किया गया था।
➢ मुबारक महल मुगल, राजपूत, यूरोपीय शैली पर आधारित है।

❖ **चन्द्रमहल- जयपुर**

➢ जयपुर के सात मंजिले चन्द्रमहल का निर्माण विद्याधर के द्वारा किया गया।
➢ चन्द्रमहल की साज - सज्जा मानसिंह द्वितीय ने जर्मन कलाकार ए.एच. मूलर से करवाई थी ।

32 खम्भों की छतरी	जगन्नाथ कच्छवाहा की छतरी	भीलवाड़ा
32 खम्भों की छतरी	जयसिंह / जैत्रसिंह की छतरी	सवाईमाधोपुर
80 खम्भों की छतरी	मूसी महारानी की छतरी	अलवर
84 खम्भों की छतरी	भगवान शिव को समर्पित छतरी	बूंदी

❖ **राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ एवं महल**

जैसलमेर की प्रमुख हवेलियाँ

❖ **पटवों की हवेली**

- इस हवेली को 1805 ई. में गुमानचन्द बापना ने बनवाया था।
- यह हवेली पाँच मंजिला है जिसमें प्रथम मंजिल जहाज के आकार की, दूसरी मंजिल आयताकार तथा पाँचवीं मंजिल पर स्वतंत्र रथ आकार के जाली - झरोखे हैं।
- इस हवेली में हिन्दू, मुस्लिम, ईरानी, व यहूदी शैली का मिश्रण बना है ।

❖ **सालिम सिंह की हवेली**

- जैसलमेर के प्रधानमंत्री सालिमसिंह ने 1815 ई. में इस हवेली का निर्माण करवाया।
- यह जैसलमेर की सबसे ऊँची इमारत है।

❖ **नथमल की हवेली**

- इस हवेली का निर्माण हाथी और लालू नामक दो भाईयों ने 1881-85 ई. के बीच करवाया।
- पीले पत्थर से निर्मित दो हाथी हवेली के दरवाजे पर खड़े हैं जो द्वारपालों का आभास करवाते हैं।

❖ **राव राजा बर्सलपुर की हवेली - जैसलमेर**

❖ **सोढ़ों की हवेली- जैसलमेर**

❖ **दीवान आचार्य ईसरलालजी की हवेली- जैसलमेर**

शेखावटी

❖ **नवलगढ़ हवेली (झुंझुनूँ)**

- इसे शेखावाटी की स्वर्ण नगरी कहते हैं।
- भगतों की हवेली यहाँ की सबसे विशाल हवेली है।

❖ **सोने-चाँदी की हवेली (महनसर, झुंझुनू)**

❖ माल जी का कमरा (चुरू)

- इस कमरे का निर्माण सेठ शोभाचंद कोठारी के पुत्र मालचंद कोठारी ने करवाया था।
- यह भित्ति चित्रों के लिये प्रसिद्ध है।

❖ **रामनाथ गोयनका की हवेली :** मंडावा (झुंझुनू)

❖ **पंसारी की हवेली :** श्रीमाधोपुर (सीकर)

❖ **मन्त्रियों की हवेली :** चुरू

❖ **सुराणों की हवेली :** चुरू (चुरू का हवामहल)

❖ **खेतड़ी महल :** झुंझुनू (राजस्थान का दूसरा हवा महल)

जोधपुर

❖ **पुष्य हवेली- जोधपुर**

- पुष्य हवेली विश्व का एकमात्र ऐसा भवन है, जो एक ही नक्षत्र पुष्य नक्षय से बना है।
- पुष्य हवेली का निर्माण जसवन्त द्वितीय के कामदार पुष्करना रघुनाथमल जोशी उर्फ भूरजी ने करवाया।

❖ **बड़े मियां की हवेली**

❖ **राखी हवेल**

बीकानेर

❖ **रामपुरिया हवेली**

❖ **बच्छावतों की हवेली - कर्णसिंह बच्छावत ने बनवायी थी।**

❖ **मुंधड़ा हवेली**

❖ **मोहता हवेली**

बागौर हवेली- उदयपुर

- इसके निकट पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र स्थित है।
- यहाँ संसार की सबसे बड़ी पगड़ी रखी हुई है।

राजस्थान का हवेली स्थापत्य :-

- राजस्थान में हवेली स्थापत्य कला का विकास स्वतंत्र रूप से 17वीं-18वीं सदी में सेठ - साहूकारों द्वारा प्रमुख रूप से हुआ ।
- राजस्थान की हवेलियाँ अपने छज्जों, बरामदों और झरोखों पर बारीक व उम्दा नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।

मुख्य रूप से नारंगी और हरे रंग का प्रयोग किया गया था ।	सफेद, गुलाबी, स्लेटी, लाल रंगों का प्रयोग किया गया था।
प्रसिद्ध पेंटिंग - उम्मेद सिंह का जंगली सूअर का शिकार करते हुए का चित्र ।	प्रसिद्ध पेंटिंग -'बणी-ठणी (मोरध्वज निहालचंद द्वारा चित्रित ।

❖ **प्रमुख चित्रकला शैलियाँ एवं चित्रकार**

चित्रकला शैली	-	**प्रमुख चित्रकार**
मेवाड़ या उदयपुर शैली	-	**साहिबदीन**, धनसार, मनोहर, **कृपाराम**, उमरा, **नसीरुद्दीन**, जीवा, नगा, शिवदयाल, शाहजीमियां, रघुनाथ, शिवा भोपा
नाथद्वारा शैली	-	महिला चित्रकार - **कमला, इलायची** पुरुष चित्रकार- श्रीरामचंद्र बाबा, भगवान नारायण, चतुर्भुज, रामलिंग, घासीराम, **उदयराम**, देवकृपण, चम्पालाल, तुलसी, हरदेव, हीरालाल, बिठ्ठल आदि
शाहपुरा उपशैली	-	**श्रीलाल जोशी**, दुर्गालाल जोशी
देवगढ उपशैली	-	केवला प्रथम, बगता, कंवला द्वितीय, हरचंद, नंगा, **चोखा**, बैजनाथ आदि।
चावंड शैली	-	**नसीरद्दीन (निसरदी)**
जोधपुर (मारवाड़) शैली	-	भाटी अमरदास, दानाभाटी, जीतमल, बिशनदास, भाटी शिवदास, समा, सेफू, नाथो, वीरजी, रतनजी, छज्जू, मतीराम, किशनदास, देवदास, रामसिंह भाटी, लादूनाथ, सरताज, सतिदास आदि
बीकानेर शैली	-	हमीरू रुकुद्दीन, मुस्सबीर रुकुद्दीन, उस्ता आसीर खां साहिबद्दीन, मुन्नालाल, मुकुंद, कायम, कासिम, अलीराजा मुराद, नाथू, शिवराम जोशी, मेघराज, जयकिशन, रामकिशन
किशनगढ शैली	-	सूरध्वज, मोरध्वज, निहालचंद, भंवरलाल, लाड़लीदास, सूरजमल, बदनसिंह, तुलसीदास, सीताराम, नानकराम, मूलराज, भीकचंद, अमीरचंद, धन्ना, छोटू
अजमेर शैली	-	चाँद, तैयब, नवला, रामसिंह, लालजी, नारायण भाटी, माधोजी, राम, अल्लाहबख्स, उस्ना, साहिबा(महिला चित्रकार)
जयपुर शैली	-	साहिबराम, सालिगराम, घासी, रघुनाथ, लालचंद, हुक्मा, रामसेवक, जीवन, निरंजन, दयाराम, राजू, उदय, लक्ष्मण, सीताराम, रामदीन, गोपाल, गोविंदा, शिवदास, गोविन्दराम
अलवर शैली	-	बलदेव, गुलामअली, रामगोपाल
आमेर शैली	-	हुक्मचंद, मुरली, मन्नालाल, पुष्पदत्त
उणियारा शैली	-	धीमा, मीरबख्स
बूंदी शैली	-	अहमद अली, रघुनाथ, गोविन्दराम, डालु, लच्छीराम, नूरमोहम्मद, सुरजन, रामलाल, श्रीकिशन एवं साधुराम आदि ।
कोटा शैली	-	रघुनाथ, गोविन्दराम, डालु, लच्छीराम, नूरमोहम्मद, कन्हैयालाल ब्राहमण

☞ **हस्तशिल्प**

- राजस्थान की हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध है इसलिए राजस्थान को हस्तकलाओं का अजायबघर / खजाना कहा जाता है।
- हस्तकला उद्योग केन्द्र बोरानाडा, जोधपुर में है।
- हस्तकलाओं का तीर्थ जयपुर को कहते हैं।
- राजस्थान में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक सरक्षण देने वाला संस्थान राजसीको है जिसकी स्थापना 3 जून, 1961 को जयपुर में की गई थी। राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं को राजस्थान लघु उद्योग निगम राजस्थली नाम से विपणन करता है।
- वर्ष 1998 की ओद्योगिक नीति में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक सरंक्षण दिया गया है।

❖ **पॉटरी**

- मिट्टी (Clay) को गूँथकर, उसे चाक (Wheel) या हाथों की सहायता से निश्चित आकार देने और फिर उसे भट्टी (Kiln) में उच्च तापमान पर पकाकर कठोर, मजबूत और स्थायी बनाने की कला को **'पोटरी'** या **'मृण्मय कला'** कहा जाता है।
- पॉटरी का उद्धव दमिश्क (सीरिया की राजधानी) में माना जाता है जो फारस, अफगानिस्तान होती हुई भारत आयी।
-

❖ ब्लू पॉटरी

- चीनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- इसके लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को है।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुर्नजिवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पदम् श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्ल्यू पॉटरी की प्रसिद्ध महिला कलाकार नाथी बाई है।

❖ ब्लैक पॉटरी

- **ब्लैक** पॉटरी केथुन,कोटा की प्रसिद्ध है।
- कोटा की सुनहरी ब्लैक पॉटरी फूलदानों, मटकों और प्लेटों के लिए प्रसिद्ध है।

❖ कागजी पॉटरी

- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।
- पुराने कागज़ (रद्दी) को भिगोकर लुगदी बनाई जाती है उसमें गोंद/मेथी/मुल्तानी मिट्टी मिलाई जाती है।
- सांचे में ढालकर सुखाया जाता है।
- फिर उस पर रंगाई-चित्रकारी और वार्निश की जाती है।

❖ मोलेला पॉटरी

- मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है ।
- मिट्टी की **उभरी हुई पट्टिकाएँ (Terracotta plaques)**
- इन पर देवी-देवताओं की आकृतियाँ बनाई जाती हैं

❖ बीकानेरी पॉटरी (सुनहरी पॉटरी)

- बीकानेरी पॉटरी को 'सुनहरी पॉटरी' या 'गोल्डन पॉटरी' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें बर्तनों पर **लाख के रंगों** (Lac colours) का उपयोग किया जाता है और उन्हें सोने (Gold) की नक्काशी से सजाया जाता है।

❖ मूनव्वती / उस्ता कला

- इस कला में ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी की जाती है।
- यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- हीसामुद्दीन उस्ता कला के प्रमुख चित्रकार हैं, जिन्हें इस कला के लिए वर्ष 1986 में पद्मश्री दिया गया था। मुहम्मद हनीफ उस्ता, कादर बक्श इसके कारीगर हैं ।
- उस्ताकला को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना 15 अगस्त, 1975 को की गई थी जिसके प्रथम निदेशक हीसामुद्दीन उस्ता को बनाया गया था।
- इलाही बक्श ने ऊँट की खाल पर बीकानेर शासक महाराजा गंगासिंह का चित्र बनाया ।

❖ मथैरणा कला

❖ 'इस कला में कपड़े पर सुनहरी नक्काशी की जाती है। यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है। इस कला में ईसर, गणगौर, देवी - देवताओं की भीत्ति चित्र बनाये जाते हैं । मुन्नालाल, चन्दूलाल मथैरणा कला के प्रमुख कारीगर थे।

अध्याय – 5

प्रमुख जनजातियाँ एवं उनकी परम्पराएँ रीति रिवाज

❖ **कंजर**

- **मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।**
- मुख्य व्यवसाय : चोरी करना।
- चोरी करने से पूर्व देवता से आशीर्वाद मांगते है, जिसे ये'**पातो (पाती) मांगना**' कहते है।
- **जोगणिया माता (चितौड़गढ़) : कंजरों की कुलदेवी।**
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
- रक्त दंजी माता : बूंदी।
- हनुमान जी : आराध्य देव।
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते है।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफ़नाते है।
- इनके मुखिया को'पटेल' कहते है।
- मोर का मांस खाते है।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- **महिलाएँ चकरी नृत्य करती है। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा पहनते है, जिसे'खूसनी' कहते है।**

❖ **कथौड़ी**

- **उदयपुर जिले में अधिक संख्या में।**
- मूल रूप से महाराष्ट्र के है।
- **खैर के वृक्ष से कत्था बनाते है,** इसलिए कथौड़ी कहते है।
- कथौडी दूध नहीं पीते है।
- कथौड़ी शराब पीते है एवं महिलाएँ भी पुरुषों के बराबर बैठकर पीती है।
- महिलाएँ गहने नहीं पहनती, गोदना गुदवाती है।
- **कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी'फड़का' कहलाती है।**
- इनका मुखिया'नायक' कहलाता है।
- **प्रमुख कविता :** आराध्य देवता डूंगर देव, बाघ देव, भारी माता, कंसारी माता।
- **कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है,**
- इनको'मनरेगा' में विशेष लाभ दिया जाता है पूरे परिवार को 250 दिन का रोजगार दिया जाता हैं।
- **कथौड़ी पुरुषों द्वारा'मावलिया नृत्य' नवरात्रा** के दिनों मे किया जाता है और महिलाओं द्वारा होली पर होली नृत्य करते है।
- **कथौड़ी झोंपडे को'खोलरा' कहते है।**

❖ **डामोर**

- **मुख्यत : उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा जिले ।**
- **सर्वाधिक जनसंख्या : डूंगरपुर**
- डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति' को डामरिया क्षेत्र कहते है।
- एकमात्र जनजाति जो वनाश्रित नहीं है।
- कृषि एवं पशुपालन करते है।
- डामोर अपनी उत्पति'राजपूतों' से मानते है।
- डामोर पुरुष महिलाओं के समान गहने पहनते है।
- होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम'चाड़िया' कहलाता है।
- मुखिया को **मुखी** कहते है।
- डामोर **बहुविवाह** करते है।
- विवाह का आधार वधु मूल्य कहते है।

❖ **सांसी**

- **भरतपुर जिले में अधिक संख्या में है।**
- इनकी उत्पति सांसमल से मानी जाती है।
- इनकी दो उपजातियाँ है : बीजा एवं माला।
- सांसी विधवा विवाह नहीं करते है।
- **'भाखर बावजी' कुलदेवता** की कसम खाने के बाद ये झूठ नहीं बोलते है।
- कसम खाते समय यह एक हाथ में कुल्हाड़ी एवं दूसरे हाथ में पीपल का पत्ता रखते है।
- (भाखर बावजी के मंदिर में) लड़की को शादी के बाद अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है, जिसे'कुकड़ी' रस्म कहते है।
- सिकोदरी माता इनकी प्रमुख आराध्य देवी है।
- ये हरिजनों को अपना मुखिया मानते है व अपने विवादों का निपटारा भी इन्ही से करवाते है

❖ **गरासिया**

- सिरोही : आबू, पिण्डवाड़ा तहसील में।
- गरासिया महिलाएँ सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रेम विवाह को अधिक तवज्जो दी जाती है।**

विवाह के प्रकार : मोरबंधिया विवाह (परम्परागत)

- पहरावना विवाह
- ताणना विवाह (पैसे देकर या छीनकर)
- मेलबो विवाह (बाल विवाह के बाद बड़ी होने पर लड़की को ससुराल छोड़कर आना)।
- **सेवणा** - गरासियों में प्रचलित इस विवाह में स्त्री प्रेमी के साथ भागकर विवाह करती है।
- **खेवणा** - गरासिया जनजाति में विवाहित महिला का अपने प्रेमी के साथ भागकर विवाह करना खेवणा कहलाता है।
- सेवा विवाह (घर जंवाई)।
- **गरासिये के मुखिया को सहलोत या पालवी कहते है।**
- सफेद पशु एवं मोर को पवित्र मानते है।
- **नक्की झील मे अस्थियों का विसर्जन करते है।**
- मृत्यु के 12वें दिन : अंतिम संस्कार।
- गरासिया जनजाति राजस्थान की तीसरी बड़ी जनजाति है।

गरासियों की जातीय पंचायत के प्रकार :

- मोटी नियात / ऊँचलो नियात : उच्च श्रेणी के लोग होते है, जिन्हें बाबोर हाइया' कहते है।
- नेनकी नियात : इसमें शामिल लोगों को माडेरिया कहा जाता है।

- निचली नियात – निम्न श्रेणी के लोग भाग लेते हैं।
- जब कोई गरासिया पुरुष भील महिला से शादी कर लेता है तो उसे **भील गरासिया** कहते हैं और जब कोई गरासिया महिला भील पुरुष से शादी कर लेती है तो उसे **गमेती गरासिया** कहते हैं।
- हुर्रे या मोगी: मृतकों की याद में बनाए जाने वाले स्मारक।
- हेलरू : गरासियों की सहकारी संस्था।

गरासियों के प्रमुख मेले

- **सियावा गाँव का मेला** : गणगौर, इस मेले में प्रेम विवाह अधिक होते हैं।
- **कोटेश्वर मेला** : यह अम्बा जी में भरता है।
- **चेतर-विचितर मेला** : देलवाड़ा।
- **अनाज भंडार की कोठिया** : सोहरी।

❖ **सहरिया :**

- **राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)।**
- **बारां जिले के किशनगंज एवं शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।**
- **सहरियों का मुखिया : कोतवाला**
- बड़े गाँव को 'सहराना' कहा जाता है।
- छोटी बस्ती को 'सहरोल' कहा जाता है।
- गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र दालिया/हथाई कहलाता है।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है :
- **पंचताई** : पाँच गाँवों की पंचायती।
- **एकदसिया** : 11 गाँवों की पंचायती।
- **चौरासिया** : 84 गाँवों की पंचायती।
- चौरासी गाँवों की सभा सीताबाड़ी के वाल्मिकी मंदिर में होती है।
- सहरिया वाल्मिकी को अपना आदि पुरुष मानते हैं।
- **सहरियों की कुलदेवी कोडिया माता।**
- तेजाजी एवं भैरव की भी पूजा करते हैं।
- दीपावली पर हिंडा गाते हैं।
- होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते हैं। **राई नृत्य किया जाता है।**
- **मकर सक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डों से लेंगी खेला जाता है।**
- वर्षा ऋतु में **आला एवं लहंगी गीत** गाया जाता है।
- **कपिलधारा का मेला** : कार्तिक पूर्णिमा
- **सीताबाड़ी का मेला** : ज्येष्ठ पूर्णिमा। इसे 'सहरियों का कुम्भ' भी कहते हैं।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती हैं परंतु पुरुषों का मनाही है।
- **धारी संस्कार** : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों एवं राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह जैसी आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेड़ों पर घर बनाकर रहते हैं। उसे 'गोपना' कहते हैं।
- अनाज एवं घरेलू सामान रखने की छोटी कोठी : कुसिला
- अनाज व घरेलू सामान रखने की बड़ी कोठी : भडेरी

❖ **भील :**

- **राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति।**
- भील शब्द की उत्पति 'विल' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है तीर-कमान।
- भीलों का मुख्य अस्त्र तीर कमान ही है।
- **भील राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है।**
- **उदयपुर जिले में सर्वाधिक संकेन्द्रण।**
- **भील 'टोटम' को अपना कुलदेवता मानते हैं।**
- **पेड़-पौधों को 'टोटम' का प्रतीक** माना जाता है।
- केसरिया नाथजी (ऋषभ देव) की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते हैं।
- **'फाइरे-फाइरे' भीलों का रणघोष है।**
- **हाथीवेडो विवाह : पेड़-पौधों को साक्षी** मानकर किया जाने वाला विवाह। (हरज एवं लाड़ी)
- मंगेरिया त्यौहार के अवसर पर शादी की जाती है।
- **भील बाल**-विवाह नहीं करते हैं।
- **तलाक को 'छेड़ा फाड़ना'** कहा जाता है।
- यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी दूसरे पुरुष के साथ रहती है तो उस पुरुष को पूर्व पति को झगड़ा राशि देनी पड़ती है।
- विवाह के समय दूल्हें द्वारा अपने ससुराल में भराड़ी माता का मंदिर बनाना होता है।
- **भराड़ी माता को विवाह की देवी कहते हैं।**
- भील पुरुषों द्वारा हाथीमना नृत्य किया जाता है।
- **होली के दूसरे दिन गैर नृत्य किया जाता है।**
- **गंवरी भीलों का प्रसिद्ध लोकनाट्य है** जो रक्षाबन्धन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है।
- हेलमो : भीलों द्वारा मिलजुल कर किया जाने वाला कार्य।

भीलों के प्रमुख मेले :

- **छोटिया अम्बा मेला : बाँसवाड़ा।**
- **बेणेश्वर मेला : डूंगरपुर** (माघ पूर्णिमा) **नवाटापुरा गाँव में।**
- भील स्थानान्तरित कृषि करते है। यह दो प्रकार की होती
- **दजिया :-** मैदानी भागों में की जाने वाली कृषि।
- **चिमाता :-** पहाड़ी भागों में की जाने वाली कृषि।
- **भीलो का मुखिया 'गमेती' कहलाता है।**
- **मेवाड़ के राजचिन्ह** में भील का चित्र बना हुआ है।
- मेवाड़ के महाराणा के राजतिलक में भी भील सरदार भूमिका निभाता था।

अध्याय – 8

राजस्थान के लोक देवी-देवता

☞ लोक देवियाँ

❖ **करणी माता**

- करणी माता चारणों की कुलदेवी एवं बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी है।
- 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात है।
- जन्म सुआप गाँव (फलौदी) के चारण परिवार में हुआ था।
- इनके बचपन का नाम रिद्धु बाई था।
- करणी माता का मंदिर को मठ कहलता है।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।
- करणी माता के मंदिर में पाए जाने वाले सफेद चूहों को **काबा** कहा जाता है।
- यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल था।
- राव कान्हा ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर के लिए चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- करणी जी की इष्ट देवी'तेमड़ा माता' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर है ।
  चील को करणी माता का रूप माना जाता है।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- चैत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता है।
- मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी
- करणी माता के इस मंदिर में दो कढ़ाई स्थित है, जिनके नाम - **"सावन-भादो कड़ाइयाँ"** हैं।

चरजा - चारण देवियों की स्तुति चरजा कहलाती हैं। जो दो प्रकार की होती है। 1. सिघाऊ - शांति/सुख के समय उपासना 2. घाडाऊ - विपत्ति के समय उपासना

❖ **जीण माता**

- चौहान वंश की आराध्य देवी ।
- ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी।
- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई प्याला मदिरा पान करती है ।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है । इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती है ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है ।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है ।
- जीण माता को शेखावटी क्षेत्र की लोक देवी व मधुमक्खियों की देवी के नाम से जाना जाता है।
- यहाँ अब केवल बकरे के कान चढ़ाते है।

❖ **कैला देवी**

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी ।
- इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र नवरात्रों को भरता है।
- कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।
- कैला देवी को माँस का भोग नहीं लगता ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- इनका मंदिर 19वीं शताब्दी में गोपाल सिंह द्वारा कालीसिल नदी के मुहाने पर त्रिकुट पहाडी पर बनवाया गया।
- यहाँ घुटकन नृत्य प्रसिद्ध है जिसे गुर्जर व मीणा जाति के लोग करते हैं।

❖ **शिला देवी**

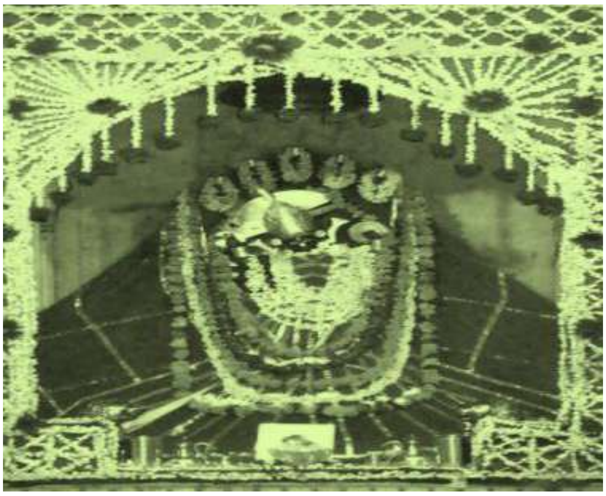

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी।
- इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।
- शिला माता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है ।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर 'जस्सोर' नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति 16वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।
- आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग में स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था
- मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका ।

❖ **जमुवायमाता (अन्नपूर्णा माता)**

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी ।
- इनका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर में है। इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

❖ **आई माता**

- आई माता के बचपन का नाम - जीजीबाई
- जन्म - अम्बाकुर (गुजरात)
- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी है ।
- इनका मंदिर बिलाड़ा गाँव (जोधपुर) में है।
- इनके मंदिर को 'दरगाह' व थान को 'बड़ेर' कहा जाता है।
- ये रामदेवजी की शिष्या थी।
- इन्हें मानी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मंदिर में मूर्ति नहीं होती तथा जलने वाले दीपक की ज्योति से केसर टपकती रहती है । इनके मंदिर का पूजारी दीवान कहलाता है ।

❖ **राणी सती**

- सती माता - अग्रवालों की कुल देवी
- पति - तन-धन-दास
- विश्व का सबसे बड़ा सती माता का मंदिर झुंझुनू में तथा दूसरा बड़ा मंदिर खेमीसती झुंझुनू में ही है।
- वास्तविक नाम 'नारायणी'।
- 'दादीजी' के नाम से लोक प्रिय।
- झुंझुनू में हर वर्ष भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है।
- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी।
- राज्य सरकार ने 1988 में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि 1987 में देवराला (श्रीमाधोपुर, सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

❖ आवड़ माता

- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुलदेवी ।
- इनका मंदिर तेमड़ी पर्वत (जैसलमेर) पर है।
- जैसलमेर के तेमड़ी पर्वत पर एक साथ सात कन्याओं को देवियों के रूप में पूजा जाता है ।

❖ स्वांगिया जी माता

- राज चिन्हों में सबसे ऊपर पालम चिड़िया, जिसे शकुल चिड़ी भी कहते है यह देवी का प्रतीक है।
- सुगन चिड़ी को आवड़ माता का स्वरूप माना जाता है।

❖ शीतला माता

- इन्हें चेचक की देवी, सेढ़ल माता, बोदरी देवी, बच्चों की संरक्षिका आदि नामो से भी जाना जाता है।
- जांटी (खेजड़ी) को शीतला मानकर पूजा की जाती है ।
- शीतला माता का मंदिर **चाकसू गांव (जयपुर) में शील की डूंगरी पर** स्थित है। तथा इस मंदिर का निर्माण महाराजा श्री माधोसिंह द्वितीय ने करवाया था।
- इस मंदिर में चेत्र कृष्णा अष्टमी (शीतलाष्टमी) को वार्षिक पूजा व विशाल मेला भरता है। इस दिन लोग बास्योड़ा मनाते हैं।
- इनकी पूजा खंडित प्रतिमा के रूप में की जाती है तथा पुजारी कुम्हार होते हैं।
- इनकी सवारी 'गधा' है।
- इसे सैढल माता या महामाई भी कहा जाता है।
- शीतला माता एकमात्र देवी है जो खण्डित रूप में पूजी जाती हैं।

❖ सुगाली माता

- आऊवा (पाली) के ठाकुर कुशाल सिंह चंपावत की ईष्ट देवी है।
- इस देवी की प्रतिमा के10 सिर और 54 हाथ है।
- इन्हें 1857 की क्रान्ति की देवी माना जाता है।
- सुगाली माता की मूर्ति वर्तमान में पाली के बागड़ संग्रहालय में रखी गई है, इससे पहले यह अजमेर के राजपूताना म्यूजियम में थी।

❖ नकटी माता

- जयपुर के निकट जयभवानी पुरा में 'नकटी माता' का प्रतिहार कालीन मंदिर है ।

❖ ब्राह्मणी माता

- ब्राह्मणी देवी कुम्हारों की कुल देवी है।
- बारां जिले के अंता कस्बे से 20 किमी. दूर सोरसन ग्राम के पास ब्राह्मणी माता का विशाल प्राचीन मंदिर है।
- विश्व में संभवतः यह अकेला मंदिर है जहाँ देवी की पीठ की ही पूजा होती है अग्र भाग की नहीं।
- यहाँ माघ शुक्ला सप्तमी को गधों का मेला भी लगता है।

❖ जिलाणी माता

- जिलाणी माता का मंदिर कोटपूतली-बहरोड़ जिले के बहरोड़ कस्बे की प्राचीन बावड़ी के समीप स्थित है ।
- जिलाणी माता ने हिंदुओं को मुसलमान बनने से बचाया था।

❖ अम्बिका माता

- उदयपुर जिले के जगत गाँव में इनका मंदिर है, जो मातृदेवियों को समर्पित होने के कारण शक्तिपीठ कहलाता है।
- जगत का मंदिर 'मेवाड़ का खजुराहो' कहलाता है।
- यह राजा अल्लट के काल में 10वीं सदी के पूर्वार्द्ध में महामारु शैली में निर्मित है। यह मंदिर मातृदेवियों को समर्पित है।

❖ पथवारी माता

- तीर्थयात्रा की सफलता की कामना हेतु राजस्थान में पथवारी देवी की लोकदेवी के रूप में पूजा की जाती है।
- पथवारी देवी गाँव के बाहर स्थापित की जाती है ।